ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-7

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

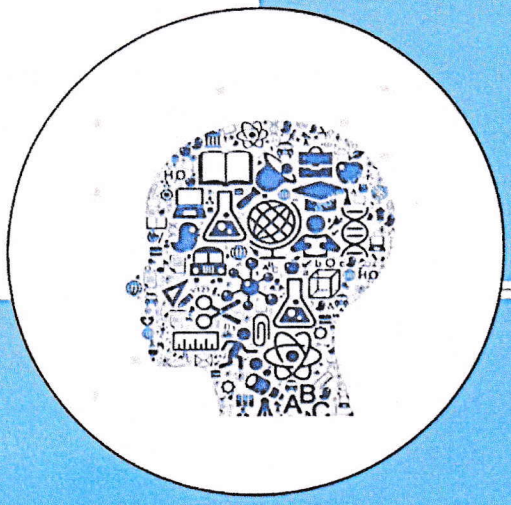

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-7 March- Apr 2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

March-Apr Volume-2 Issue-7

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. V. V. Killedar
Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur

Co- Editors

डॉ. एस. पी. पवार	लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील	डॉ. एस. जे. आवळे
प्रा. एन.पी. साठे	प्रा. ए. बी. घुले	प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे
	डॉ. एन. ए. देसाई	

Published by- Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

24	हिन्दी उपन्यासों में किसान विमर्श : स्वरूप विवेचन ('गोदान','ग्लोबल गाँव के देवता' और 'फाँस' के विशेष संदर्भ में) मिर्जा मासुमे फातिमा	63-65
25	शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी विमर्श मोल्लम डोलमा	66-67
26	'भावना के पीछे' नाटक में चित्रित नारी प्रा. साठे नीता पोपट	68-69
27	'कुइयाँजन' उपन्यास में महानगरीय विमर्श प्रा. डॉ. नेहा अनिल देसाई	70-71
28	दलित चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति (सूरजपाल चौहान का कविता संग्रह 'क्यों विश्वास करूँ' के विशेष संदर्भ में) डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे	72-74
29	'फाँस' उपन्यास में चित्रित कृषक जीवन डॉ.परमेश्वर जिजाराव काकडे	75-77
30	जागतिकीकरण और सबसे कठिन काम कहानी प्रा. डॉ. पवन नागनाथ एमेकर	78-79
31	'अकाल में उत्सव' उपन्यास में किसान जीवन की व्यथा प्राजक्ता शिवाजी कुरळे	80-81
32	दलित अस्मिता और हमारे हिस्से का सूरज डॉ.प्रकाश आठवले	82-85
33	उत्तरशती के हिंदी उपन्यासो में नारी समस्या डॉ. प्रकाश राजाराम मुंज	86-89
34	दलित चेतना का दस्तावेज : छप्पर प्रा. डॉ. आर. बी. भुयेकर	90-92
35	भूमंडलीकरण और हिंदी कविता लैफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील	93-95
36	हिंदी साहित्य में आदिवासी साहित्य की विकास धारा: एक परिपेक्ष्य के रूप में डॉ. आर. पी. भोसले	96-98
37	सुनील अवचार यांच्या कवितेतील ग्लोबल वर्तमान डॉ सुनिता रामचंद्र कांबळे	99-100
38	चंद्रकांता के 'अंतिम साक्ष' उपन्यास में नारी विमर्श रविंद्रनाथ माधव पाटील	101-103
39	कुर्सी पहियोंवाली' में उद्धृत नारी आत्मनिर्भरता कु . प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	104-106
40	समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री- विमर्श सौ. रेशमा गणेश लोंढे	107-108
41	आँचलिक उपन्यासों में नारी विमर्श प्रा. रोहिणी गुरुलिंग खंदारे	109-110
42	नारी की व्यथा को उजागर करता नाटक 'जी, जैसी आपकी मर्जी.... प्रा.रूकसाना अल्ताफ पठाण	111-112
43	श्री मैथिलीशरण गुप्तजी की कविता 'सैरंध्री' में नारी-विमर्श सुश्री. रूपाली संभाजी पाटील	113-114
44	'नरककुंड में बास' उपन्यास में दलित विमर्श प्रा. डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत	115-117
45	नीरजा माधव के 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर विमर्श डॉ.संजय पिराजी चिंदगे	118-119
46	समकालीन हिंदी साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श डॉ. संजय ना. पाटील	120-123
47	भूमंडलीकरण का दलितों पर अधूरा प्रभाव प्रा.राठोड संजय लिंबाजी	124-126

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.2 Issue.7 Mar - Apr 2022

'भावना के पीछे' नाटक में चित्रित नारी

प्रा. माठे नीता पोपट
सहाय्यक प्राध्यापक, राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर
ईमेल – sathenecta@gmail.com

बीसवी शताब्दी की सबसे बडी उपलब्धि है, 'नारी जागरण' या नारी स्वतंत्रता | पितृसत्ताक संस्कृति के कारण प्राचीन काल से नारी की स्थिति शोषित, दमित या दोहरे स्थान के व्यक्ति के रूप में ही रही है लेकिन आधुनिक नारी का रूप बिल्कुल भी परिवर्तित हो गया है | आज वह शिक्षित, जागरूक एवं आत्म-निर्भर बन चुकी है | वह सभी प्रकार के शोषण का विरोध करती हुई 'नारी जागरण' का नारा लगा रही है | अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी के इस रूप का चित्रण किया है | नारी का यह रूप डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र के अनेक नाटकों में दिखाई देता है | हिंदी नाट्य साहित्य में एक प्रख्यात नाटककार के रूप में डॉ. सुरेश शुक्ल चद्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है | उन्होंने अपने लेखन के प्रारम्भिक दौर में आदर्श या यथार्थपरक नाटक लिखे लेकिन बाद में परिवेश प्रधान नाटकों का सृजन किया | हिंदी नाटक साहित्य जगत में चन्द्र जी के नाटक एक नए नाटकों की शुरुआत करते हुए दिखाई देते है, इसी कारण अनेक साहित्यकारों ने उन्हें 'प्रयोगधर्मी नाटककार' की संज्ञा दी है | उन्होंने सामाजिक नाटकों के माध्यम से पारिवारिक विघटन, नारी स्वतंत्रता के पक्ष को उजागर किया है | नारी को केन्द्र में रखकर अनेक नाटकों की रचना की है | उनके नाटकों में स्थित नारी जीवन को देखने से पहले नारी शब्द का अर्थ जानना जरुरी है -

नालंदा विशाल शब्दसागर में 'नारी' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है –''[संज्ञा स्त्री.] (सं) 1.स्त्री | औरत |[1]

प्राचीन युग में स्त्री को एक भोग-विलास की वस्तु के रूप में देखा जाता था लेकिन आधुनिक युग में शिक्षित नारी ने वस्तु से एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वयं को परिवर्तित किया है | इस परिवर्तन के कारण स्त्री और पुरुष में अपने अधिकार या अहं को लेकर टकराहट हो रही है और यही पारिवारिक विघटन का कारण बनता जा रहा है | इसी संदर्भ में डॉ. जयदेव तनेजा लिखते है, ''स्त्री के 'वस्तु से व्यक्ति' बनने के लिए उसका सुशिक्षित, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और जागरूक होना एक बुनियादी शर्त है | परन्तु विडम्बना यह है जैसे-जैसे यह स्तर, रुतबा और स्थान पाया है वैसे ही वैसे पति-पत्नी में अहं और अधिकार की टकराहट भी तेजी से बढ़ रही है | परिणामस्वरूप विवाह नामक संस्था और घर-परिवार की व्यवस्था के लिए विध्वंसक एवं विस्फोटक स्थितियों का अनुपात भी तेजी से बढ़ता गया है |''[2] आज की शिक्षित नारी समान अधिकार, सम्मान तथा न्याय के लिए लड़ रही है | वह पूरी तरह से बदल चुकी है | उसने आधुनिकता तथा पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया है इसी वजह से वह पारिवारिक विघटन का कारण बनती जा रही है | डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र का सन 1978 ई. प्रकाशित 'बदलते रूप' नाटक संग्रह पारिवारिक विघटन की समस्या को ही प्रस्तुत करता है | इसमे तीन लघु पारिवारिक नाटक सगृहीत है – 'भावना के पीछे', 'शादी का चक्कर' और 'बदलते रूप' | तीनों ही परिवार प्रधान सामाजिक नाटक है |

'बदलते रूप' नाटक संग्रह का प्रथम नाटक है – 'भावना के पीछे' | डॉ. चन्द्र ने उसे पहले 'आधुनिका' नाम से सामाजिक एकांकी के रूप में लिखा था, बाद में उसे 'भावना के पीछे' नामक नाटक में परिवर्तित किया | प्रस्तुत नाटक नारी स्वतंत्रता के प्रश्न को उजागर करता है | नाटक की केंद्रीय पात्र रेखा पुरुष स्वतंत्रता का विरोध करनेवाली प्रतिक्रियावादी नारी है , जिसे आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति तथा सभ्यता ने विकृत बनाया है | डॉ. परवीन अख्तर के शब्दों में, '' आज की अति भौतिकता ने जिस संस्कृति को जन्म दिया है, उसी संस्कृति ने रेखा जैसे चरित्र की सृष्टि की है |''[3] रेखा आधुनिकता तथा पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करनेवाली महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है | नारी स्वतंत्रता की पक्षधर नौकरी पेशा नारी रेखा परिवार की कर्ता धर्ता बनी है | इंटरमीडिएट तक पढ़ने के बावजूद भी अपने ग्रजुएट पति अखिलेश को घर की सारी जिम्मेदारी सौपकर स्वयं नौकरी करती है , क्योंकि वह पुरुषों की स्वतंत्रता के बिल्कुल खिलाफ है | अपने बेरोजगार पति अखिलेश से कहती है, '' मै पुरुषों की स्वतंत्रता पसंद नहीं करती | पुरुष बड़े चालबाज होते है | अगर मैंने तुम्हें कभी बाहर जाते देख लिया तो उसी दिन घर से निकल बाहर करुँगी |''[4] रेखा अपने ग्रजुएट पति अखिलेश की बेरोजगारी का पूरा-पूरा फायदा उठते हुए दिखाई देती है | वह अपने पति के साथ घरेलू नौकर के समान बर्ताव करती है | चाय-नाश्ता तथा खाना बनाने से लेकर कपडों पर इस्तरी करने तक के सारे काम अखिलेश से करवाती है | किसी काम में गलती होने पर उसे बुरी तरह से अपमानित करती रहती है तथा उसे हर वक्त अपने पर बोझ होने का एहसास दिलाती है |

नाटक की दूसरी पात्र उर्मिला रेखा की सहेली है, जो रेखा से बिल्कुल भी विरोधी स्वभाव की एक समझदार स्त्री है | उर्मिला के माध्यम से चन्द्र जी ने भारतीय नारी के आदर्श रूप को रेखांकित किया है | रेखा का पति के साथ इस तरह का व्यवहार देखकर उर्मिला रेखा को समझाते हुए कहती है, '' मेरी समझ से, जो तुम कर रही हो, ठीक नहीं है |''[5] उर्मिला के समझाने के बाद भी रेखा में किसी तरह का परिवर्तन नहीं होता , बल्कि वह उल्टा उर्मिला को ही समझाते हुई कहती है, ''अब पुरुषों के नकेल लगाना जरुरी है | स्वतंत्र रहने पर वे बिगड़ जाते है...दूसरों की बहू-बेटियाँ ताकते है | मै तो अखिलेश को बाहर तक निकलने नहीं देती |''[6] रेखा अपने मित्र उमेश के सामने भी अखिलेश को अपमानित करती है | स्वच्छंद विचारों की रेखा उमेश

के साथ घुमती-फिरती है या पिकनिक पर जाती है | रेखा उमेश के बहकावे में आकर अखिलेश जैसे सदाचारी युवक को छोड़कर भाग जाती है और उमेश से शादी करती है | शादी के बाद उमेश बदल जाता है और रेखा को नौकरी छोड़कर घर के कम करने के लिए कहता है | रेखा इस बात का विरोध करती है, लेकिन उमेश रेखा को अपनी प्रकृति बदलने को कहता है और यदि ऐसा नहीं हुआ तो उसे छोड़कर चले जाने की धमकी देता है | रेखा के स्वच्छंदता को पसंद करनेवाला उमेश अंत में विरोध करता हुआ दिखाई देता है | वह रेखा से कहता है, '' जिस नारी में पुरुष वर्ग के प्रति आक्रोश है, वह सच्ची पत्नी बनकर नहीं रह सकती |''[7] अलग-अलग प्रकृति के कारण रेखा और उमेश में झगड़े बढ़ जाते है और एक दिन उमेश रेखा को छोड़कर दूसरी लड़की के साथ शादी करता है | यह बात रेखा को पता चलती है तो वह पूरी तरह टूट जाती है | वह कहती है, ''मैंने अपने हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी | अखिलेश कितना अच्छा था, मैं जो कहती थी, वही करता था | मै यह भूल गई कि मै नारी हूँ, और मेरी स्वतंत्रता की भी एक सीमा है | आज मै कही की न रही |''[8] रेखा को अपने पति अखिलेश को छोड़ आने का पछतावा होता है | इस बात का परिणाम रेखा पर इतनी गहराई से होता है की वह आत्महत्या कर लेती है |

रेखा के चरित्र के माध्यम से चंद्र जी ने आधुनिक बनी नारी का भीतरी खोखलापन उजागर किया है | इस बात की पुष्टि महेश द्वारा कही गयी बात से होती है- '' उसकी स्वतंत्रता उसे खा गयी | भावुकता और आवेश ने उसके विवेक को नष्ट कर दिया | जितनी स्वतंत्रता उसे मिली थी, उतनी एक नारी के लिए उचित नहीं थी |''[9] इस तरह नारी स्वतंत्रता की पक्षधर रेखा भावना के पीछे बह जाती है और अपनी जिंदगी नष्ट करती है | वास्तविकता से पति-पत्नी में प्रेम, आदरभाव, विश्वास, स्नेहभाव, भावात्मक समन्वय, आदि होना आवश्यक है तभी उनका दाम्पत्य जीवन सुखी होता है | हर एक मनुष्य को स्वतंत्रता से जीवन जीने का अधिकार है, चाहे वह पुरुष हो, या स्त्री | अपनी स्वतंत्रता का गलत इस्तमाल करने की वजह से रेखा जैसी आधुनिक नारी को अपनी जिंदगी ख़त्म करनी पड़ी |

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र जी ने प्रस्तुत नाटक के माध्यम से आधुनिक युग की नई संस्कृति से निर्मित 'नारी स्वतंत्रता' जैसे अच्छे विचारों का गलत व्यवहार करने का परिणाम क्या हो सकता है यह रेखा के माध्यम से प्रस्तुत किया है | आत्मनिष्ठ, अहंवादी नारी का स्वर्थप्रेरित बर्ताव पारिवारिक समाज व्यवस्था को ध्वंस कर देता है
| प्रस्तुत नाटक द्वारा समाज में पाश्चात्य जीवन पद्धति का अंधानुकरण करते हुए स्वयं को आधुनिक माननेवाली नारी अपनी संस्कृति के प्रति विद्रोह करती है | पितृसत्ताक पद्धति का विरोध करने के प्रयास में तथा रूढ़ि-परम्पराओं का विरोध करने की जिजीविषा में जीवन नष्टप्राय कर देती है | आज के पारिवारिक संबंधों में नए तनावों की स्थिति को संवेदना से अभिव्यक्त किया है | आधुनिक जीवनशैली को प्रगट करने के लिए आधुनिकता का अर्थ आत्म-ग्रस्तता एवं अहंकार के रूप में लिया है | भारतीय पुरुष सत्तात्मक समाज व्यवस्था के प्रति और परम्पराओं के प्रति विद्रोह व्यक्त करने की अहंवादी प्रवृत्ति नारी को विपरीत मनस्थिति में पहुंचती है | नाटक में व्यापक और परिपक्व दृष्टि से समाज, व्यक्ति और उसके नए संबंधों, तनावों के कारण उत्पन्न समस्याओं को जीवन नष्टप्राय होने की परिस्थितियों तक पहुँचने की दर्दनाक दास्ताँ रेखांकित की है |

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. श्री नवल जी – नालंदा विशाल शब्द सागर, आदिश बुक डेपो, दिल्ली-6 पृष्ठ क्र.694
2. डॉ. जयदेव तनेजा – आधुनिक भारतीय नाट्य-विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010, पृ.क्र. 52
3. डॉ. परवीन अख्तर – समकालीन हिंदी नाट्य परिदृश, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2007ई., पृ.क्र. 122
4. डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र – बदलते रूप, अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1978, पृ.क्र.12
5. वही, पृ.क्र.15
6. वही, पृ.क्र.14
7. वही, पृ.क्र.24-25
8. वही, पृ.क्र. 28
9. वही, पृ.क्र. 32